# लोकोक्ति या कहावत

लोक + उक्ति          कह + आवत

ओ + उ = ओ

1. लोकोक्ति व मुहावरे में समानता –

(i) दोनों के शब्दों से विशेष अर्थ/भाव/आशय/तात्पर्य ग्रहण किया जाता है।

(ii) दिये गये शब्द के स्थान पर उनके पर्यायवाची शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

(iii) जुहगम वाक्यांश (दोरा वाक्य) होता है जबकि लोकोक्ति सम्पूर्ण वाक्य (पूरा वाक्य) होती है।

# महत्वपूर्ण लोकोक्तियाँ

1. **अंत भले का भला** – अच्छे काम का परिणाम हमेशा अच्छा ही होता है

2. **अंधा बांटे रेवड़ी, फिर-फिर अपनों को दे** – अधिकार मिलने पर केवल अपने सगे-संबंधियों को ही लाभ पहुँचाना

3. **अंधों में काना राजा** – मूर्खों या अज्ञानियों के बीच कम ज्ञान वाला व्यक्ति भी बहुत बुद्धिमान माना जाता है

4. **अकेले हंस उड़ गया** – अंत समय में जीव को सांसारिक माया छोड़कर अकेले ही जाना पड़ता है

आत्मा

5. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** – एक अकेला व्यक्ति कोई बहुत बड़ा या भारी काम नहीं कर सकता

6. **अधजल गगरी छलकत जाए** – कम ज्ञान, योग्यता या धन होने पर व्यक्ति द्वारा बहुत अधिक दिखावा करना

8. **अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग** – तालमेल या संगठन का अभाव होना (सबका अपनी-अपनी मर्जी से काम करना)

9. **अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है** – अपने घर या क्षेत्र में कमजोर व्यक्ति भी बहुत साहसी बन जाता है

10. **अपने हाथ जगन्नाथ** – अपना काम स्वयं करना ही सबसे उत्तम और फलदायी होता है

11. **आँख का अंधा नाम नयनसुख** – गुण के बिल्कुल विपरीत नाम होना

12. **आँख के आगे नाक सूझे** – बहुत पास की वस्तु या सत्य का भी दिखाई न देना (अज्ञानता होना)

13. **आग लगते झोपड़ा जो निकले सो लाभ** – बहुत बड़े नुकसान के समय जो कुछ भी थोड़ा-बहुत बच जाए, वही फायदा है

SelectionWay

HINDI BY ARUN SIR

14. आगे नाथ न पीछे पगहा – जिसका कोई सगा-संबंधी या जिम्मेदारी न हो (पूरी तरह बंधनहीन होना)

15. आगे कुआँ पीछे खाई – सब ओर से भारी संकट या विपत्ति में फँस जाना

16. आज हमारी कल तुम्हारी – सुख-दुःख या समय का चक्र सब पर बदल-बदल कर आता है

17. **आधा तीतर आधा बटेर** – दो बेमेल या विपरीत चीजों का मिश्रण होना (अव्यवस्थित होना)

18. **आप भले तो जग भला** – यदि व्यक्ति खुद अच्छा है, तो उसे पूरा संसार ही अच्छा दिखाई देता है

19. **आम के आम गुठलियों के दाम** – किसी कार्य से दोहरा या सब तरफ से लाभ प्राप्त होना

20. **आए थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास** – किसी बड़े या मुख्य कार्य के उद्देश्य से निकलकर किसी फालतू या छोटे काम में लग जाना

21. **आसमान से गिरा खजूर पर अटका** – एक मुसीबत से छूटकर तुरंत दूसरी नई मुसीबत में फँस जाना

22. **इतनी सी जान, गज भर की ज़बान** – बहुत छोटी उम्र या योग्यता होने पर भी बहुत बढ़-चढ़कर बातें करना

23. **इनायत की नज़र होना** — किसी की विशेष कृपा या मेहरबानी प्राप्त होना

24. **इस हाथ दे, उस हाथ ले** — कर्मों का फल तुरंत या हाथों-हाथ मिल जाना

25. **ईंट का घर मिट्टी होना** — बहुत बड़े धनी या प्रतिष्ठित व्यक्ति का पूरी तरह कंगाल हो जाना

26. **ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया** — भाग्य की विचित्रता (संसार में कहीं बहुत सुख है तो कहीं बहुत दुःख)

आश्चर्यचकित

27. उगलें तो अंधा, निगलें तो कोढ़ी – ऐसी दुविधा की स्थिति होना जिसमें दोनों ही तरफ से नुकसान या बुराई तय हो

28. उल्टा चोर कोतवाल को डांटे – अपना अपराध या गलती न मानकर उल्टा पूछने वाले पर ही दोष मढ़ना

29. ऊधव का लेना न माधव का देना – किसी से कोई वास्ता या सरोकार न रखना (पूरी तरह तटस्थ रहना)

30. **ऊँची दुकान फीका पकवान** – केवल बाहरी दिखावा बहुत अधिक होना, जबकि वास्तविकता में कोई गुण न होना

31. **ऊँट के मुँह में जीरा** – बहुत बड़े पेट वाले या बहुत अधिक आवश्यकता वाले व्यक्ति को बहुत कम वस्तु मिलना

32. **ऊँट किस करवट बैठता है** – परिणाम क्या निकलेगा, यह पूरी तरह अनिश्चित होना

33. ऊँट चढ़े पर कुत्ता काटे – सब प्रकार की सावधानी रखने या ऊँचाई पर होने के बाद भी मुसीबत का आ जाना

34. एक तो करेला, दूजे नीम चढ़ा – एक तो पहले से ही बुरा या कड़वा होना, ऊपर से बुरी संगति के कारण और बुरा हो जाना

35. एक अनार सौ बीमार – वस्तु एक ही होना और उसे पाने की इच्छा रखने वाले बहुत अधिक होना

36. **एक पंथ दो काज** – एक ही उपाय या प्रयास से दो अलग-अलग कार्यों का सिद्ध हो जाना

37. **एक हाथ से ताली नहीं बजती** – विवाद या झगड़े का कारण दोनों ही पक्षों की गलतियों से होता है (एकतरफा नहीं होता)

38. **ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना** – जब जान-बूझकर कठिन कार्य की जिम्मेदारी ले ही ली है, तो आने वाले कष्टों से घबराना क्या

39. **ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती** – बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति बहुत छोटी या नाममात्र की वस्तु से नहीं हो सकती

40. **कंगाली में आटा गीला होना** – मुसीबत या गरीबी के समय अचानक एक और नई मुसीबत का आ जाना

41. **कड़वा थू-थू, मीठा-मीठा गप्प** – अपनी पसंद या स्वार्थ की अच्छी चीजों को अपना लेना और कड़वी या कठिन चीजों को छोड़ देना

**42. कहन सुनन को दोउ भले, करन को कछु नाहिं** – बातें बनाने या उपदेश देने के लिए सब आगे रहते हैं, लेकिन खुद करने के समय कोई आगे नहीं आता

**43. कहूँ खेत की, सुने खलिहान की** – बात कुछ और कही जाए और समझने वाला उसका बिल्कुल उल्टा या दूसरा अर्थ निकाल ले

**44. कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा** – इधर-उधर की बेमेल वस्तुओं को इकट्ठा करके एक अव्यवस्थित संगठन बना लेना

SelectionWay
HINDI BY ARUN SIR

45. **काज परे कछु और है, काज सरे कछु और** – स्वार्थ के समय व्यक्ति का व्यवहार बहुत मीठा होता है और काम निकल जाने के बाद बिल्कुल बदल जाता है

46. **काटो तो खून नहीं** – अचानक लगे गहरे सदमे या डर के कारण पूरी तरह स्तब्ध या सुन्न रह जाना

47. **काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती** – छल-कपट या धोखेबाजी से किसी को केवल एक ही बार बेवकूफ बनाया जा सकता है, बार-बार नहीं

48. काम प्यारा होता है, चाम प्यारा नहीं होता – व्यक्ति की पहचान और आदर उसके रूप-रंग से नहीं, बल्कि उसके काम और योग्यता से होता है

49. काला अक्षर भैंस बराबर – पूरी तरह से अनपढ़, निरक्षर या मूर्ख होना

50. कोयले की दलाली में हाथ काले – बुरे काम या बुरों की संगति करने पर बदनामी और कलंक मिलना तय है

51. खग जाने खग ही की भाषा – साथ रहने वाले लोग ही एक-दूसरे के सुख-दुःख और भाषा को अच्छी तरह समझ सकते हैं

52. खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है – संगति का असर मनुष्य पर बहुत जल्दी और निश्चित रूप से पड़ता है

53. खाए चने चिरौंजी बन जाए – गरीब या सामान्य व्यक्ति का थोड़ा सा धन मिलते ही बहुत बड़े नखरे दिखाना

54. **खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे** – किसी बात पर लज्जित या असफल होने पर व्यक्ति द्वारा व्यर्थ में दूसरों पर अपना क्रोध प्रकट करना

55. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** – बहुत अधिक कठिन परिश्रम करने के बाद भी बहुत ही कम या नाममात्र का फल मिलना

56. **गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास** – जिसका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता (पूरी तरह अवसरवादी होना)

57. गधा धोने से घोड़ा नहीं बनता — स्वभाव या मूल प्रकृति को बाहरी दिखावे से कभी भी बदला नहीं जा सकता

58. गरीब की जोरू सब की भाभी — कमजोर या गरीब व्यक्ति पर सब अपना रोब या अधिकार जताने की कोशिश करते हैं

59. गुड़ खाए गुलगुले से परहेज — बड़ी बुराई या गलत काम को आसानी से कर लेना, लेकिन छोटी सी बात पर अच्छे होने का ढोंग करना

60. **गुड़ न दे तो गुड़ की सी बात तो करे** – यदि आप किसी की आर्थिक मदद नहीं कर सकते, तो कम से कम मधुर वचन बोलकर सांत्वना तो दे सकते हैं

61. **गुरु गुड़ ही रहे, चेला चीनी हो गए** – शिष्य का अपने गुरु से भी अधिक योग्य, सफल या आगे निकल जाना

62. **घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध** – अपने घर या पास के गुणी व्यक्ति का कोई आदर नहीं होता, जबकि बाहर के कम गुणी को भी बहुत सम्मान मिलता है

63. **घर का भेदी लंका ढावे** – आपसी फूट या घर के किसी व्यक्ति द्वारा गुप्त बात लीक करने पर बहुत भारी नुकसान होना तय है

64. **घर की मुर्गी दाल बराबर** – आसानी से उपलब्ध होने वाली या अपने पास की मूल्यवान वस्तु का भी कोई महत्व न समझना

65. **घोड़े की दुम बढ़ेगी तो अपनी ही मक्खियाँ उड़ाएगी** – यदि किसी स्वार्थी व्यक्ति की तरक्की होती है, तो उससे केवल उसका ही लाभ होता है, समाज का नहीं

66. **चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए** – अत्यधिक कंजूस होना (कष्ट सह लेना लेकिन धन खर्च न करना)

67. **चलती का नाम गाड़ी** – जब तक काम ठीक से चल रहा है, तब तक व्यक्ति की प्रतिष्ठा और सफलता बनी रहती है

68. **चार दिन की चाँदनी, फिर अंधेरी रात** – सांसारिक सुख या ऐश्वर्य बहुत ही थोड़े समय के लिए होता है (क्षणिक होना)

69. **चिराग तले अंधेरा** – दूसरों को ज्ञान या प्रकाश देने वाले व्यक्ति के अपने पास या घर में ही बड़ा दोष होना

70. **चील के घोंसले में मांस कहाँ** – जहाँ किसी वस्तु के नष्ट होने की पूरी संभावना हो, वहाँ उसका बच पाना बिल्कुल असंभव है

71. **चोर की दाढ़ी में तिनका** – अपराधी या गलत काम करने वाले व्यक्ति के मन में हमेशा एक अनजाना डर या शक बना रहता है

72. **चोर-चोर मौसेरे भाई** – एक जैसे बुरे स्वभाव या गलत काम करने वाले लोगों का आपस में बहुत जल्दी तालमेल हो जाना

73. **छछूंदर के सिर पर चमेली का तेल** – किसी अयोग्य, मूर्ख या ओछे व्यक्ति को बहुत कीमती या उच्च पद प्राप्त हो जाना

74. **छोटा मुँह बड़ी बात** – अपनी उम्र, योग्यता या हैसियत से बढ़कर बड़ी-बड़ी बातें करना

75. **जंगम स्थावर का फेर होना** – भाग्य का अचानक बिल्कुल उल्टा हो जाना या पासा पलट जाना

76. **जब तक साँस तब तक आस** – जीवन के अंतिम क्षण तक मनुष्य को कभी भी आशा नहीं छोड़नी चाहिए

77. **जल में रहकर मगरमच्छ से बैर** – अपने क्षेत्र के किसी बहुत शक्तिशाली या प्रभावशाली व्यक्ति से दुश्मनी मोल लेना पूरी तरह मूर्खता है

78. **जहाँ चाह वहाँ राह** – यदि मन में किसी काम को करने की दृढ़ इच्छाशक्ति हो, तो सफलता का रास्ता अपने आप निकल आता है

79. **जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि** – कवि की कल्पना शक्ति बहुत असीमित होती है, वह ऐसी सूक्ष्म बातें भी सोच लेता है जहाँ सूर्य का प्रकाश भी नहीं जाता

80. **जाके पैर न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई** – जिसने जीवन में कभी खुद कष्ट या दुःख नहीं झेला, वह दूसरों के दर्द को कभी महसूस नहीं कर सकता

81. **जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोए** — ईश्वर जिसकी रक्षा करना चाहते हैं, उसका पूरा संसार मिलकर भी ज़रा सा नुकसान नहीं कर सकता

82. **जितनी चादर हो उतने ही पैर पसारने चाहिए** — मनुष्य को हमेशा अपनी आय या आमदनी के अनुसार ही खर्च करना चाहिए

83. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** — शक्तिशाली व्यक्ति की ही हर जगह जीत होती है (बाहुबल की प्रधानता होना)

84. **जैसा देश वैसा भेष** – जैसी परिस्थितियाँ या वातावरण हो, मनुष्य को अपने व्यवहार को उसी के अनुकूल ढाल लेना चाहिए

85. **जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ** – दो बुरे या दुष्ट व्यक्तियों का एक जैसा ही दुराचारी स्वभाव होना

86. **जो गरजते हैं वो बरसते नहीं** – केवल बड़ी-बड़ी डींगें हाँकने या चिल्लाने वाले लोग वास्तव में कोई ठोस काम नहीं करते

87. **टके की हांडी गई, कुत्ते की जात पहचानी गई** – बहुत छोटा सा नुकसान सहकर भी किसी धोखेबाज़ या बुरे व्यक्ति की असलियत का पता लग जाना अच्छा है

88. **ठाली बनिया क्या करे, इस कोठी के धान उस कोठी में धरे** – बेकार या बेरोजगार व्यक्ति समय काटने के लिए व्यर्थ के फालतू काम करता रहता है

89. **डूबते को तिनके का सहारा** – संकट या मुसीबत के समय मिलने वाली थोड़ी सी मदद भी व्यक्ति के लिए बहुत बड़ी जीवनदायिनी बन जाती है

90. **ढाक के तीन पात** — हमेशा एक जैसी दयनीय स्थिति बने रहना (लाख कोशिश के बाद भी कोई सुधार न होना)

91. **तेल देखो, तेल की धार देखो** — किसी नए कार्य का परिणाम क्या निकलेगा, उसे धैर्यपूर्वक देखना या स्थिति को अच्छी तरह समझना

92. **तेली का तेल जले, मशालची का दिल जले** — खर्च किसी और का हो रहा हो और उसे देखकर किसी तीसरे फालतू व्यक्ति को बहुत अधिक कष्ट या जलन होना

93. **थूक कर चाटना अशुद्ध है** – अपने ही द्वारा ली गई प्रतिज्ञा या कही गई बात से मुकर जाना पूरी तरह गलत है

94. **थोथा चना बाजे घना** – ओछा, कम गुणी या कम ज्ञान वाला व्यक्ति बहुत बढ़-चढ़कर दिखावा करता है

95. **दमड़ी की बुढ़िया, टका सिर मुँड़ाई** – किसी बहुत सस्ती या कम मूल्य की वस्तु को ठीक कराने में उससे भी अधिक धन खर्च कर देना

96. **दाल भात में मूसलचंद** – दो व्यक्तियों की आपसी बातचीत या काम के बीच में किसी तीसरे का बिना मतलब टाँग अड़ाना

97. **दिन को दिन और रात को रात न समझना** – किसी बड़े लक्ष्य को पाने के लिए बिना आराम किए दिन-रात कठिन परिश्रम में जुटे रहना

98. **दूर के ढोल सुहावने लगते हैं** – दूर की वस्तुएँ, बातें या परिस्थितियाँ देखने में बहुत अच्छी मालूम पड़ती हैं, जबकि वास्तविकता अलग होती है

99. **धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का** — दो अलग-अलग नावों पर पैर रखने के कारण व्यक्ति का कहीं का भी न रह जाना (पूरी तरह व्यर्थ होना)

100. **न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी** — किसी कार्य को न करने के लिए ऐसी असंभव शर्त रख देना जो कभी पूरी ही न हो सके

101. **न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी** — विवाद या मुसीबत के मुख्य कारण (जड़) को ही पूरी तरह से समाप्त कर देना

102. **नदी किनारे का रुख, कब गिरे कब नाहिं** — अत्यंत वृद्ध या बीमार व्यक्ति की स्थिति का पूरी तरह से अनिश्चित होना (मौत के करीब होना)

103. **नया नौ दिन, पुराना सौ दिन** — नई वस्तुएँ या साथी थोड़े समय के लिए अच्छे लगते हैं, लेकिन पुरानी वस्तुएँ और पुराने मित्र ही हमेशा टिकते हैं और काम आते हैं

104. **नाई की बारात में ठाकुर ही ठाकुर** — जहाँ सभी लोग खुद को नेता या मुखिया समझने लगें और आदेश का पालन करने वाला कोई न हो

105. **नाच न जाने आँगन टेढ़ा** – अपनी खुद की कमी या योग्यता को छिपाने के लिए दूसरों या परिस्थितियों पर दोष मढ़ना

106. **नीम हकीम ख़तरा-ए-जान** – कम ज्ञान या अनुभव रखने वाले नीम-हकीम (अधकचरे डॉक्टर) से इलाज कराना जीवन के लिए बहुत भारी खतरा होता है

107. **नौ नगद न तेरह उधार** – भविष्य के बड़े लाभ की उम्मीद में उधार बेचने या बैठने से अच्छा है कि वर्तमान में थोड़ा कम लाभ लेकर भी नगद काम किया जाए

108. **पढ़े फारसी बेचे तेल, यह देखो कुदरत का खेल** – बहुत अधिक योग्यता और उच्च शिक्षा होने के बाद भी भाग्यवश किसी छोटे या फालतू काम में लगे रहना

109. **पराधीन सपनेहूँ सुख नाहीं** – जो व्यक्ति दूसरों के अधीन (गुलाम) होता है, उसे सपने में भी कभी वास्तविक सुख या शांति प्राप्त नहीं हो सकती

110. **पहले लिख और पीछे दे, भूल पड़े तो कागज़ से ले** – लेनदेन या हिसाब-किताब के मामलों में मौखिक बातों के स्थान पर लिखित रूप रखना ही सबसे सुरक्षित होता है

111. **पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं** — एक ही परिवार या समाज के सभी लोगों का स्वभाव, गुण और योग्यता कभी भी एक समान नहीं हो सकती

112. **पानी पीकर जात पूछना** — किसी कार्य को पूरी तरह समाप्त कर लेने के बाद उसके नियमों, अच्छे-बुरे या नुकसान के बारे में सोचना पूरी तरह व्यर्थ है

113. **पास की कौड़ी दूर का लाल** — अपने पास आसानी से मिलने वाली वस्तु का महत्व न समझकर दूर की दुर्लभ वस्तु के पीछे भागना

114. बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी – अपराधी या गलत काम करने वाला व्यक्ति हमेशा सजा से नहीं बच सकता, एक न एक दिन उसका पकड़ा जाना तय है

115. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद – मूर्ख या अयोग्य व्यक्ति द्वारा किसी बहुत अच्छी, गुणी या मूल्यवान वस्तु का आदर और पहचान न करना

116. बहती गंगा में हाथ धोना – अचानक मिले किसी अच्छे अवसर या समय का अपने स्वार्थ के लिए तुरंत फायदा उठा लेना

117. **बासी बचे न कुत्ता खाए** – घर में या किसी कार्य में उतनी ही वस्तु का साधन रखना जितनी आवश्यकता हो (व्यर्थ का नुकसान न होने देना)

118. **बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे** – किसी बहुत कठिन, जोखिम भरे या संकट वाले काम की शुरुआत करने की हिम्मत कौन दिखाए

119. **बैठे से बेगार भली** – पूरी तरह बेरोजगार या खाली बैठने से अच्छा है कि व्यक्ति बिना किसी विशेष लाभ के भी कोई छोटा-मोटा काम करता रहे

120. **बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होए** – जब व्यक्ति ने कर्म ही बुरे या कँटीले किए हैं, तो उसे परिणाम के रूप में अच्छे फल कभी नहीं मिल सकते

121. **भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराए** – किसी महामूर्ख या बुद्धिहीन के सामने ज्ञान और समझदारी की बातें करना अपना समय पूरी तरह व्यर्थ करना है

122. **मियाँ-बीवी राजी तो क्या करेगा काजी** – जब दो मुख्य पक्ष या व्यक्ति आपस में किसी बात पर पूरी तरह सहमत हैं, तो किसी तीसरे के विरोध का कोई मूल्य नहीं होता

123. **मुख में राम बगल में छुरी** — ऊपर से बहुत मीठा और सज्जन व्यवहार रखना, लेकिन भीतर ही भीतर दूसरों का बुरा करने का षड्यंत्र रचना

124. **मेंढकी को भी ज़ुकाम होना** — अत्यंत तुच्छ, अयोग्य या गरीब व्यक्ति द्वारा बहुत बड़े अमीर होने का ढोंग या नखरे दिखाना

125. **मेरी बिल्ली मुझी से म्याऊँ** — जिस व्यक्ति को आपने सहारा दिया या सिखाया, उसी के द्वारा आपके सामने अकड़ दिखाना या विरोध करना

126. **यथा राजा तथा प्रजा** — जैसा देश का राजा या मुखिया होता है, वहाँ की जनता का व्यवहार और आचरण भी बिल्कुल वैसा ही हो जाता है

127. **रस्सी जल गई पर बल नहीं गया** — सब प्रकार का वैभव, शक्ति या धन नष्ट हो जाने के बाद भी व्यक्ति का घमंड और अकड़ वैसी ही बनी रहना

128. **राम नाम जपना, पराया माल अपना** — ऊपर से भगवान की भक्ति और साधु होने का ढोंग करना, लेकिन भीतर से दूसरों का धन हड़पने का प्रपंच रचना

129. रोग का घर खाँसी, लड़ाई का घर हाँसी – जिस प्रकार लगातार खाँसी होने से बड़ा रोग हो सकता है, उसी प्रकार व्यर्थ का मज़ाक या खिल्ली उड़ाना बड़ी लड़ाई का कारण बन सकता है

130. लातों के भूत बातों से नहीं मानते – दुष्ट, हठी और दुराचारी लोग केवल समझाने या मीठी बातों से नहीं सुधरते, उनके साथ कड़ा व्यवहार करना ही पड़ता है

131. लिख लो लोहा, पढ़ लो पत्थर – बिना अभ्यास या लगन के पढ़ाई-लिखाई करना बिल्कुल बेकार है, वह सिर पर पत्थर ढोने के समान है

132. लुहार की एक चोट, सुनार की सौ चोट — शक्तिशाली व्यक्ति का एक ही बड़ा वार या प्रहार कमजोर व्यक्ति के सौ छोटे-छोटे प्रयासों पर भारी पड़ता है

133. लूट में चरखा नफा — जहाँ भारी नुकसान या डकैती हो रही हो, वहाँ जो कुछ भी छोटी-मोटी फालतू वस्तु बच जाए, वही फायदा है

134. लेना-देना दो बरस, बातें बहुत सी — काम ज़रा सा भी न करना, लेकिन उसके बारे में बहुत बड़ी-बड़ी डींगें हाँकना या फालतू बातें करना

135. **शठे शाठ्यं समाचरेत्** – दुष्ट व्यक्ति के साथ हमेशा दुष्टता का ही व्यवहार करना चाहिए (जैसे को तैसा)

136. **शुभस्य शीघ्रम्** – किसी भी अच्छे, परोपकारी या कल्याणकारी कार्य को करने में ज़रा सी भी देरी नहीं करनी चाहिए, उसे तुरंत कर देना चाहिए

137. **साँच को आँच नहीं** – जो व्यक्ति पूरी तरह सच्चा और ईमानदार होता है, उसे किसी भी परीक्षा, संकट या झूठे आरोपों से डरने की आवश्यकता नहीं होती

138. **सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझता है** – अमीर या हमेशा सुखी रहने वाले व्यक्ति को लगता है कि पूरी दुनिया में सब लोग बहुत खुशहाल और मजे में हैं

139. **सिर मँड़ाते ही ओले पड़ना** – किसी नए कार्य की शुरुआत करते ही बिल्कुल पहले चरण में ही बहुत बड़ी बाधा या मुसीबत का आ जाना

140. **सियाँ भए कोतवाल, अब डर काहे का** – जब अपना कोई सगा-संबंधी किसी बहुत ऊँचे या प्रभावशाली पद पर बैठ जाए, तो अनुचित काम करने पर भी डर समाप्त हो जाना

141. **सीधे उँगली से घी नहीं निकलता** — बहुत अधिक सीधा, नम्र या सीधा होने से काम नहीं बनता, कभी-कभी थोड़ा कड़ा व्यवहार भी करना पड़ता है

142. **सुइयाँ सुइयाँ कर के ही कुल्हाड़ी बनती है** — छोटी-छोटी बचतों या छोटे-छोटे निरंतर प्रयासों से ही एक दिन बहुत बड़ा भारी लक्ष्य हासिल होता है

143. **सौ सुनार की, एक लुहार की** — किसी कमजोर व्यक्ति के सौ छोटे-छोटे प्रयासों की तुलना में किसी बलवान व्यक्ति का एक ही प्रहार काफी होता है

HINDI BY ARUN SIR

144. **हँसुआ के ब्याह में खुरपा का गीत** – किसी उत्सव या माहौल के बिल्कुल विपरीत बेमेल और फालतू बातें करना (कुसमय की बातें करना)

145. **हथेली पर सरसों नहीं जमती** – बहुत बड़ी सफलता या कठिन कार्यों को पूरा करने में समय और धैर्य की आवश्यकता होती है, वे तुरंत (चुटकी बजाते ही) पूरे नहीं हो सकते

146. **हमारी बिल्ली मुझी से म्याऊँ** – अपने ही पाले हुए या सिखाए हुए व्यक्ति द्वारा अपने ही सामने अकड़ दिखाना या चुनौती देना

147. **हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े-लिखे को फ़ारसी क्या** – जो बात बिल्कुल प्रत्यक्ष और आँखों के सामने साफ हो, उसके लिए किसी बाहरी प्रमाण या सबूत की आवश्यकता नहीं होती

148. **हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और** – कपटी या ढोंगी व्यक्ति की कथनी (कहना) और करनी (करना) में बहुत भारी अंतर होना

SUPER- GO मस्त

149. **होनहार बिरवान के होत चीकने पात** – जो बालक आगे चलकर बहुत महान या प्रतिभावान बनने वाले होते हैं, उनके लक्षण बचपन में ही दिखाई देने लगते हैं

10:15 P.M

150. **ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं** – जीवन के वास्तविक सत्य और अज्ञानता को दूर किए बिना मनुष्य का कल्याण संभव नहीं है

SelectionWay
HINDI BY ARUN SIR

# Thank you